शोध-सार

लेखिका मृणाल पाण्डे नारी-विमर्श को लेकर लिखती रही हैं। उनका मानना है कि संसार में स्त्री-पुरुष एक दूसरे के पूरक है। स्त्री भी एक मनुष्य है उसका अपना व्यक्तित्व है, वह पुरुष की अर्द्वागिनी है। फिर भी पुरुष उसे सदैव कमतर ही समझता रहा है। अपने विचारों, स्वभाव एवं कार्य से स्त्री ने समाज में अपना उचित स्थान बनाया है और इस सुगम स्थान को पाने में उसे कई वर्ष लगे हैं। प्राचीन काल से लेकर अब तक स्त्री जिस पितृसत्तात्मक व्यवस्था का शिकार हुई है उसमे स्त्री का ही दोष माना जाता है यहाँ तक कि उसे स्त्री का भाग्य कह दिया गया है। स्त्री कभी मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से कभी कमजोर नही रहीं फिर भी उसे मूल्यहीन समझ गया। कथाकार शिवानी की पुत्री मृणाल पाण्डे ने अपने कई पीढ़ियों की कथा को साहित्य में वर्णित किया है। अपने नानी-दादी की कहानियों को आधार बनाकर नारी-विमर्श की स्पष्ट व्याख्या की है। इनका नारी-विमर्श रिपोर्टपरक है। आलोचकों तथा साहित्यकारों के नारीवादी व्याख्या को नकार कर एक सर्वेपरक नारीवाद की जो मनोभूमि लेखिका ने तैयार किया है, यह प्रशंसनीय है। कई राज्यों, प्रदेशों की यात्रा कर लेखिका ने स्त्रियों का विवरण तैयार किया है जिसे झुठलाया नही जा सकता। इनका नारी-विमर्श एक-एक आकड़ा उपस्थित करता है। चूंकि मृणाल पाण्डे एक

पत्रकार हैं इसलिए वे नारीवाद को प्रयोगात्मक तौर पर प्रस्तुत करती हैं। इनका नारीवादी विश्लेषण स्त्रियों के प्रति एक सकारात्मक शोध को इंगित करता है। आज भारत में जिस नारीवाद की जरूरत है उसकी पहचान मृणाल पाण्डे ने की है। मृणाल पाण्डे कहतीं हैं कि- "भारतीय स्त्रियों में उच्च शिक्षा के प्रसार और उनकी रोजगार के क्षेत्र में तर्कसंगत ढंग से खपत के बीच आज भी एक गहरी दरार मौजूद है। यह दरार हमारे राज समाज में व्याप्त एक नकली साहसिकता और बनावटी मध्यवर्गीय भद्रता ने बनाई है। ऊपर-ऊपर से भले ही आज सभी समझदार भद्रजन स्त्री-मुक्ति और स्त्री शिक्षा के हिमायती हों, किन्तु भीतरी तौर पर स्त्री शिक्षा और स्त्री के लिए रोजगार की अहमियत को समाज और राज्य व्यवस्था आज पूरी तरह उसके स्वामी और परिवार के सन्दर्भों से ही बांधकर परखने के आदी हैं। युवतियां नौकरी करें, पैसा कमाएँ तो ठीक, किन्तु नौकरी उनके घरेलू काम और परिवार के प्रति स्वामी भक्ति में आड़े न आए और उन्हे पुरुषों की तरह प्रतिस्पार्धाप्रिय तथा स्पष्टवादी न बनाए, यह अपेक्षा सामाजिक तथा सरकारी सोच में गहरे से बैठी हुई है।"[1]

मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में स्त्रियों की अनेक समस्याओं का जायजा मिलता है। आंचलिकता से भरे इनके उपन्यासों में नारीमन की अकुलाहट मुखरित हुई है। वर्षो से दबी नारी मन की संवेदना तथा साहस की मनःस्थिति घर-परिवार की महिलाओं के साथ जुड़ती दिखाई गयी है।

'**पटरंगपुर पुराण**' **एवं** '**हमको दियो परदेश**' में नारी की दशा और दिशा की जो झलक दिखाई देती है वह आज भी द्योतित हो रही है। लोककल्याण और लोकसंस्कृति के ताने-बाने से गुंफित इनके उपन्यास सामाजिक, धार्मिक तथा मनोवैज्ञानिक विसंगतियों को उजागर करते हैं। '**विरुद्ध**' उपन्यास में मानसिक द्वन्द्व को दिखाया गया है। '**रास्तों पर भटकते हुए**' उपन्यास में नारी विमर्श के वाह्य एवं आन्तरिक आयामों की विस्तृत चर्चा है। '**अपनी गवाही'**में पत्रकारिता जीवन केअनुभवों को दिखाया गया है। रिपोर्टपरक शैली में लिखा गया उपन्यास '**देवी**' हमारी देवियों को आधार बनाकर लिखा गया है जिसके केन्द्र में स्त्रियों की समस्या एवं व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक शोषण को बड़ी ऊर्जा एवं शक्ति के साथ लेखिका ने दिखाया है। कलाकारिता तथा संगीत की परख **'सहेला रे'** उपन्यास में अभिव्यक्त है। इसके अलावा इनके उपन्यासों में बेटा और बेटी में भेद की समस्या, दहेज की समस्या, तलाक की समस्या, पहाड़ी जीवन की समस्या, को दिखाया गया है। इनके उपन्यासों में भाषा का सहजतापन मौजूद है। भाषा वातावरण के साथ मिलकर एक परिवेश ही नही उपस्थित करती बल्कि मानव-जीवन के कई उपमानों को गढ़ती है। ग्रामीण जीवन में रचा बसा समाज भाषा की बानगी के साथ स्वयं उपन्यास में व्यक्त हो रहा है। व्यंग्य में कहीं खुरदरापन तो कहीं जीवन जीने का मोह है। सीधी सरल सपाटबयानी में लेखिका ने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री-विमर्श की जिस दीवार को खड़ा किया है उसकी नींव हजारों वर्षों तक लोगो को अपनी ओर आकर्षित करेगी।

मृणाल पाण्डे के नाटकों का विषय स्त्री-विमर्श ही रहा है। नाटकीय पद्धति से जिस नारी विमर्श का मानदण्ड लेखिका ने तैयार किया है वह आलोचकों एवं समीक्षकों के चिन्तन का विषय बन गया है। इनके नाटकों में भारतीय तथा फारसी नाटकों का संयोग आसानी से मिल जाता है। भारतीय नारीवाद एवं पश्चिम के नारीवाद में मुख्य अन्तर क्या है? इनके नाटकों में मौजूद है। इनके नाटक रंगमंचीय दृष्टि से लिखे गए है। कुछ नाटकों का मंचन कई बार हो चुका है। नाटकों में दहेज की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, नारी उत्पीड़न तथा घरेलू हिंसा की समस्या को नाटकीय अंदाज में पेश किया गया है। इनके नाटक केवल व्यक्ति एवं समाज को रोमांचित ही नही करते बल्कि एक यथार्थपरक जीवन की कड़ी को साहित्य के साथ जोड़ते हैं। समस्या प्रधान इनके नाटकों में वैषम्यता की भी झलक मिलती है। अन्य लेखक/लेखिकाओं की अपेक्षा इनके नाटक सरल, विनोदपूर्ण एवं अनुकरण योग्य है। अंको की संख्या भी बहुत ज्यादा नही है। पात्र भी काल्पनिक होते हुए नाटक में स्वाभाविक लगते हैं। पात्रों में नारी एवं पुरुष दोनो हैं परन्तु स्त्रियां ज्यादा सशक्त एवं संघर्षशील है। नारी संवेदना की मनोभूमि पर आधारित इनके नाटक स्त्री शिक्षा, रोजगार, निजी समस्याएँ, जीवन की अनुभूति को परत दर परत खोलते है। पाठक नाटक पढ़ते हुए सहज हो जाता है। उसके अन्दर कई तरह के सवाल उठते है परन्तु वह उन्हीं नाटकों में अपना समाधान भी पा जाता है। '**रामरचि राखा**' नाटक एक सामान्य स्त्री की समस्या के पहलुओं को टटोलता है। '**काजल की**

कोठरी' और '**चोर निकल कर भागा**' दोनो नाटक स्त्री विमर्श के ऐसे प्रतिमान गढ़ते है कि पढ़ते-पढ़ते पाठक,लेखक बिल्कुल समीक्षक की भूमिका में आ जाता है। '**शर्मा जी की मुक्तिकथा'** एक पत्रकार की हैसियत से लिखा गया नाटक है। पत्रकारिता के दौर में व्यक्ति को जीवन में कितने विरोध झेलने पड़ते हैं? इन विरोधों के बावजूद वह अपनी नौकरी करते हुए समाज सेवा में जुड़ा रहता है। मृणाल पाण्डे एक पत्रकार भी हैं इसलिए उन्होने पत्रकारिता के मानदण्डों को नाटकों में प्रयोग किया है, जो साहित्य में वस्तुतः एक नया प्रयोग है।

लेखिका मृणाल पाण्डे ने रेडियो नाटकों की भी रचना की है। छोटे-छोटे रेडियों नाटक रुचिपूर्ण है। '**सुपर मैन की वापसी**' और '**धीरे-धीरे रे मना**' इसी तरह के नाटक हैं। सुपर मैन हर कार्य करने में सक्षम है, वह लोगों की समस्या का समाधान करने के लिए पैसा लेता है। आज भी हमारे समाज में तमाम ऐसे लोग मिल जाएंगे जो लोगों से सामाजिक कार्यो के बदले में पैसे ऐठते हैं**।** '**धीरे-धीरे रे मना**' नाटक नारीवाद की रूढ़ियों के प्रति व्यंग्य है। नारी को साहसी एवं गौरवमयी बनाने की प्रेरणा देता है। स्त्रियों की विसंगतियों का जिक्र इस नाटक के माध्यम से अभिव्यक्त है। यह नाटक प्रेरणादायक होते हुए नारीवाद के नए मूल्यों की तरफ प्रेरित करता है।

मृणाल पाण्डे की कहानियाँ नारी मन की गहरी परतों को खोलती हैं। जिस शिद्दत और तल्लीनता के साथ लेखिका ने स्त्रियों के संसार को अपने रचना संसार में समेटा -है, वह स्त्री के अस्तित्व को निर्धारित करता है। इनकी कहानियाँ परत दर परत एक रहस्य को बताती है जो कामकाजी स्त्रियों से लेकर शिक्षा प्राप्त औरतों की दुनियां का ग्राफ तैयार करती है। कहानियाँ घटना प्रधान होते हुए जीवन मूल्यों की ओर संकेत करती हैं। मृणाल पाण्डे के तीन कहानी संग्रह है जिसमें लगभग तीन दर्जन कहानियां हैं।नई कहानी के मानदंडों को निर्धारित करती इनकी कहानियां वर्तमान समय की घटनाओं की समीक्षा सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा मनोवैज्ञानिक स्तर पर करती हैं। अक्सर इनकी कथाओं में स्त्री ही मुख्य पात्र होती है जो समूचे रचना केन्द्र का प्रतिनिधित्व करती है। बदलती पीढ़ी के मूल्यों को तरासने का काम इनकी कहानियों ने किया है जो वस्तुतः सत्य है। पाठक को कहानियां पढ़ने के बाद यह विश्वास हो जाता है कि वे गढ़ी नही गयी हैं बल्कि आज के परिवेश को खोजती हैं। छोटे एवं मध्यवर्गीय परिवार की समस्या, जाति-पाँति, भेद-भाव, गरीब, मजदूर, दलित, अधिकारी वर्ग, एकाकी जीवन बिताने वाले, बुजुर्ग, विधवा तथा अन्य सभी वर्गों का चित्रण इनकी कहानी के कैनवास को विस्तृत कर देता है। इनकी कहानियां बहुउद्देशीय है, केवल एक लक्ष्य को इंगित नहीं करती। प्राचीन काल से लेकर भूमण्डलीयकरण तक के दौर-तय करने वाला इनका साहित्य जनसामान्य को आश्चर्य में डाल देता है।

इनकी कहानियाँ जनसामान्य तथा स्त्रियों के लिए लिखी गई हैं। चरित्र चित्रण की दृष्टि से इनकी कहानियां स्त्री चरित्रों को उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करती हैं। वैविध्यता से भरा इनका सम्पूर्ण साहित्य पाठक को केवल पढ़ने के लिए ही नही है वरन वह कुछ न कुछ सीखता रहता है। **'बचुली चौकीदारिन की कढ़ी' तथा 'एक स्त्री का विदागीत'** में स्त्री की उस परिधि को नापा गया है जहाँ तक वह स्त्रियों के संसार को सामाजिक विषमताओं के साथ दिखा सके। **'चार दिन की जवानी तेरी**' नामक कहानी संग्रह धराशायी मूल्यों को पुनजीर्वित करती है। सदियों से चली आ रही शोषण एवं अत्याचार से ग्रस्त स्त्रियों को साहसी एवं चिन्तनशील दिखाया गया है जो उनकी प्रगतिशीलता का सूचक है। मृणाल पाण्डे ने अपने कथा संसार के बारे में स्वयं कहा है कि-'कथा हो या कथा लेखन की प्रक्रिया, मानव जीवन की तरह दोनों ही कभी भी न तो पूरी तरह परिभाषित किये जा सकते हैं, और न ही मानवीय कल्पना का अपमान करते हुए उनके निष्कर्ष चन्द सूक्तियों या फतवों में समेटे-सिमटाये जा सकते हैं।"[2]

निबन्धों की दुनियां में भी मृणाल पाण्डे का महत्वपूर्ण योगदान है। छोटे-छोटे वैचारिक लेख (जो खासकर स्त्रियों के लिए लिखे गए हैं) नारी विमर्श की पोल खोलते है। महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा, तमिलनाडु आदि राज्यों में भ्रमण कर स्त्रियों के स्वास्थ्य, शिक्षा तथा कामकाज की जानकारी प्राप्त कर उनका सारगर्भित विश्लेषण अपने निबन्धों में लेखिका ने किया

है। एक पत्रकार होने के नाते उन्होने स्त्रियों से मिलकर तथा समस्याएं जानकर उनका सर्वेपरक विवरण दिया है। इनके लेख स्त्रियों की तड़प एवं कड़वाहटों का हवाला देते ही है साथ ही साथ नारी गरिमा की अवधारणा को स्पष्ट करते है। इनकी पुस्तक **'ओ उब्बीरी'** में नारी की जिस विषम परिस्थिति को दिखाया गया है उससे लगता है कि सरकारी दावें के बाद भी उनमें बदलाव नही हुए है। भ्रूणहत्या में अब तक कमी नही आई है जिससे स्त्री-पुरुष के अनुपात में असन्तुलन बना हुआ है। शिक्षा की उचित व्यवस्था न होने के कारण स्त्री साक्षरता में कमी बनी हुई है। स्त्रियां यदि आर्थिक रूप से सबल हो भी जाए फिर भी उनके शोषण एवं अराजकता में कमी नही आएगी। मातृत्व मृत्यु दर कई वर्षो से कम नही हो रही है। डॉक्टरों एवं अस्पतालों की व्यवस्था न होने के कारण आए दिन पिछड़े व ग्रामीण इलाकों की स्त्रियां बिना इलाज के मर जाती हैं। उनके प्रसव के दौरान गांवों मेंइलाज की व्यवस्था न होने से वे गर्भपात का शिकार हो रही हैं। बाल मृत्यु दर भी इसी कारण बढ़ रहा है।

निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियों की स्थिति और गम्भीर है। वह घर का कामकाज तो करती ही हैं साथ ही साथ बाहर खेत में जाकर मजदूरी भी करती हैं जिससे उनका स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है। उनके बच्चे कुपोषित हो जाते हैं क्योकि वे उनकी देखभाल भी नही कर पाती। '**जहाँ औरतें गढ़ी जाती है**' में स्त्री के साथ हो रहे बुरे बर्ताव का चित्रण है। दफ्तर, कार्यालयों

में जो स्त्रियां काम करती हैं उनके साथ दोहरा बर्ताव होता है। काम के बदले उनको कम पैसे मिलते हैं। पत्रकारिता या फिल्मी दुनियां में भी स्त्रियां सुरक्षित नही हैं। वहाँ भी उनको कार्य ज्यादा करने पड़ते हैं साथ ही शारीरिक, मानसिक शोषण का शिकार भी हो जाती हैं। '**स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक**' नामक पुस्तक में नारीवाद की रुढ़ियों का खण्डन है। **'ध्वनियों के आलोक में स्त्री'** में स्त्री का संगीत एवं कला के क्षेत्र में उनके योगदान का विश्लेषण है। अपनी गायन एवं कला के बल पर स्त्रियों ने सदियों से अपने दर्दो को उसमें पिरोया है। **'परिधि पर स्त्री' तथा** '**स्त्री लम्बा सफर'** दोनो लेख पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलाफत का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। स्त्री के सफर की कहानी जो उसके शोषण और दबाव में रची गयी है वह इन लेखों में आसानी से मिल जाती है।

भाषा की सादगी एवं स्पष्टता के कारण इनके लेख चर्चित रहे हैं। लेखों में व्यवहारिकता तथा जीवन बोध जुड़ा हुआ है। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा के शब्द आसानी से लेख में मिल जाते हैं। स्त्री की भाषा एवं उनकी टोन विचारों को एक नई दिशा देते हैं।

मृणाल पाण्डे एक पत्रकार हैं। पत्रकारिता जगत के अनुभवों एवं वैज्ञानिकता का प्रमाण इनके साहित्य में उतर आया है। समाचार पत्रों में भी इनके गूढ़ विचारों के लेख छपते रहे हैं। शोध की प्रामाणिकता एवं भावों की निजता के कारण एक पत्रकार जीवन के अनुभवों को व्यक्त करता

रहता है। लेखिका ने पत्रकारिता के सूक्ष्म अंदाजों एवं जनसामान्य की वाणी को मूल्य परक बनाया है। स्त्रियों के जीवन की कहानी को आधार देकर नारी-विमर्श की बनावटी अंदाज को दरकिनार कर अपने अनुभवों को कथा साहित्य में समेट लिया है।

इस प्रकार यह कहना सार्थक प्रतीत होता है कि मृणाल पाण्डे ने स्त्री-विमर्श की जो पड़ताल की है वह वैचारिक स्तर पर एक प्रेरणा स्त्रोत है। वर्षो से दबी-कुचली मानसिकता से बाहर निकलकर उपेक्षित नारी को शिक्षा, राजनीति, समाज तथा न्यायिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। किताबी नारी विमर्श से आगे बढ़कर मृणाल पाण्डे ने शोधपरक एवं रिपोर्टपरक नारीवाद को बढ़ावा दिया है। यही कारण है कि उनका नारीवाद सभी के लिए चुनौतीपूर्ण बन गया है। नारीवाद पर लिखते समय उनके विचार बहुत गहरे होते हैं इसलिए नारीवाद पर बतकही करने वाले लेखकों/समीक्षकों/स्त्रीवादियों को कठघरे में खड़ा करते है। वे नारी विमर्श के सकारात्मक लेखन को एक नया मार्ग देती हैं जिससे नारियों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान कायम रहे। नारीवाद की नई परिभाषा देते हुए मृणाल पाण्डे कहतीं हैं कि- "नारीवाद कत्तई स्त्रियों को वृहत्तर समाज से अलग-थलग रखकर देखने और हर क्षेत्र में पुरुषों के खिलाफ उन्हें प्रोत्साहित करने का दर्शन नही। यह तो एक समग्र दृष्टिकोण है जो संवेदनशील नागरिकों में पहले शोषित और प्रवंचित स्त्रियों की स्थिति के प्रति सहानुभूति

और मानवीय दृष्टिकोण विकसित करके उसके उजास में उन्हे अपने पूरे समाज के शोषित और प्रवंचित तबकों को समझने की क्षमता देता है। साथ ही उनके प्रति एक तरह की सदस्यता तथा कर्मठ दायित्वबोध जगाता है।"[3]

उपसंहार

संदर्भ- सूची:-

(1) शुक्ला अर्चना-मृणाल पाण्डे का रचना संसार, पृष्ठ (पुस्तक के कवर पृष्ठ से)

(2) पाण्डे मृणाल-चार दिन की जवानी तेरी, (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-08

(3) पाण्डे मृणाल-परिधि पर स्त्री, (1946), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-47